जीवन विद्या राष्ट्रीय सम्मेलन

गोबिन्द पुर -खारी (झालू)जिला - बिजनौर ,उ० प्र० 17 नवम्बर 2000

रपट:-

छटवॉ जीवन विद्या राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन गोबिन्द पुर -खारी (झालू) जिला - बिजनौर उ० प्र० मेदिनॉक 17 से 19 नवम्बर 2000 को सम्पन्न हुआ। सम्मेलन अभियान की तैयारी के अर्थ मे रखा गया स्वराज्य अभियान'' धरती पर अपनी तरह का पहला प्रयास है। इसकी पूर्व तैयारी हो जाये तो निश्चित ही हम सफल होगे।

सम्मेलन का आशय = विकास व जागृति के अर्थ में परस्पर पूरक होना। परस्पर उत्सावित होने का कार्य क्रम है।

सम्मेलन आदरणीय संजीव जैन की घोषणा एवं दिनेश जैन के वन्दना गीत से प्रारंभ के द्वारा हुआ। परिचय के क्रम में रणसिंहआर्य जी - आये हुये लोगों का स्वागत, अभिनंदन करने के पश्चात जीवन विद्या के प्रकाश में मानव शुभ की बातें कही । मैं 1991 तक सामाजिक ,धार्मिक संगठनो के माध्यम से काम करता हुआ द्वंद में जीता रहा,संयोग से पूज्य बाबा जी से सम्पर्क हुआ। बाबाजी से जुडने से लेकर प्रतिष्ठान चालु होते तक अपनी सफलता असफलता की जानकारी प्रस्तुत किया। तत्पश्चात विद्या की अवधारणा में देश भर में चल रहें कार्यक्रमों की जानकारी सभी आगन्तुक भाई अपने - अपने स्तर से रखे तथा निम्नलिखित बिन्दुओं सामुहिक निष्कर्ष हो इसी आशा से सम्मेलन का आयोजन किया गया ।

1. प्रबोधक परिपूर्णता - जो भी व्यक्ति प्रबोधक में लगें है उनकी हर आयाम - दिशा-कोण-परिपेक्ष में परिपूर्णता आवश्यक है ताकि वो कहीं कम न पडें। उनके संपूर्ण प्रशिक्षण का क्या स्वरूप हो ? इसके लिए रखे गए अनुभव शिविरों का क्या स्वरूप हो? कैसे उनको समाधान-स्वावलम्बन व मानवीयतापूर्ण आचरण में परिपूर्ण बनाया जायें ?
2. समझ की एकरूपता - सभी प्रबोधक वस्तु को समान रूप में रख पा रहें इसको जाँचना,कमियों की भरपाई करना इस हेतु निश्चित स्वरूप बनाने की आवश्यकता है।
3. परस्पर मैत्री - सभी प्रबोधकों एवं अभियान को अर्पित मित्रों में परस्पर विश्वास व श्रेष्ठता का सम्मान हो। वास्तव में अभियान तो परस्पर पूरकता (न्याय) को प्रमाणित करने का ही नाम है। इसकी हम सभी में आवश्यकता कैसे उदय हो इस हेतु सार्थक प्रयास का क्या स्वरूप हो,तय करना।
4. जीवन विद्या शिविर का निश्चित स्वरूप बच्चों,युवा,महिलाओं,परिवार एवं समय को ध्यान में रखकर और अधिक प्रभावी बनाना।
5. शिक्षा के मानवीयकरण के स्वरूप यथा विद्यालय, पाठ्य पुस्तक, शिक्षक आदि को तय करना। स्वतंत्र विद्यालयों का निर्माण,चल रहे विद्यालयों में भागीदारी का स्वरूप निश्चित करना। विद्यालय के लिए उत्सुक व्यक्तियों से हमारा कार्य विधान का स्वरूप क्या हो ? विद्यालय स्वायत्तता का स्वरूप तथा शिक्षकों के स्वावलम्बन के स्वरूप को निकालना।
6. स्वराज्य योजना - का स्वरूप,विधि,प्रणाली,पद्धति को सुनिश्चित करना उसकी पूर्व तैयारी के लिए कार्यक्रम बनाना।
7. परस्पर भागीदारी स्वराज्य के अर्थ में विभिन्न स्थानों की परस्पर भागीदारी के स्वरूप को स्पष्ट करना।
8. प्रकाशन - बाबा के संपूर्ण वांग्मय का प्रकाशन, सुरक्षा व सदुपयोगिता को सुनिश्चित करना। स्वराज्य के अर्थ में अंन्य शिक्षण सामग्री एवं साहित्य तैयार करना एवं उसका प्रकाशन करना।
9. मानवीय स्वावलम्बन को (आज की अव्यवस्था में) सुनिश्चित करना एवं अभियान से जुडे सभी जन स्वावलम्बी हों इसके स्वरूप को सुनिश्चित करना।
10. अन्य संस्थाओं-संगठनों के साथ भागीदारी का स्वरूप निश्चित करना।
11. विद्या के प्रचार-प्रसार के स्वरूप को निश्चित करना।
12. परिवार मानव पत्रिका के सम्पादन, लेखन प्रकाशन,वितरण में सभी केन्द्रों की भागीदारी के स्वरूप को सुनिश्चित करना।
13. अभियान के लिए सूचना प्रौद्योगिकी (आई.टी.) के प्रयोग का स्वरूप-प्रारूप तय करना।
14. संपूर्ण कार्यक्रमों का मूल्यांकन - प्रोत्साहन व गति के स्वरूप को निश्चित करना।

प्रस्तुति -

दिनेश जैन आँवरी (छ.ग.) - चारामा क्षेत्र में 90 से गायत्री परिवार आँवरी में एक आश्रम व्यवस्था के आधार पर कार्य कर रही है 97 - 98 से विद्या की अवधारणा में तीनों आयाम समाधान,सामाजिकता,स्वावलम्बन के आधार पर- आश्रम परिवार स्तर ,समाज स्तर,शासन में कार्य संचालित हो रहा है। आश्रम परिवार में दस भाई बहन है ,उनके समाधान के लिए प्रति दिन समूहिक चर्चा, परिवारिक गोष्ठी एवं शिविर का आयोजन किया जाता है। प्रति दिन परस्परता में व्यवहार कार्य का मूल्यांकन होता है। स्वावलम्बन के काम में अगरबत्ती,हवन सामाग्री,कृषि,डेयरी एवं अन्य संस्थानों के उत्पादनों की मार्केटिंग करके स्वावलम्बी बनाने का प्रयास किया जा रहा है। समाज स्तर में सभी आयाम शिक्षा-संस्कार,स्वास्थ-संयम,उत्पादन -कार्य,विनिमय कोष तथा न्याय -सुरक्षा सभी मुद्दों पर संचालित किया जा रहा है। शासन के साथ यहाँ पर राजीव गांधी जल ग्रहण मिशन,पढना-बढना आन्दोलन (समझदार साक्षर अभियान),कृषि विभाग,पशु-चिकित्सा विभाग,सौर उर्जा विभाग ,महिला एवं बाल विकास के साथ विद्या की अवधारणा में कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। **श्री बी.एल.श्रीवास्तव जी -कांकेर,(छत्तीसगढ)**- आदरणीय बाबाजी से 92 से जुडने का सौभाग्य प्राप्त हुआ,मुझे पूर्व के परम्परा गत बुराइयों से आघात पहुंचा था। बाबाजी से सम्पर्क में आने के पश्चात लाल माटवाडा नामक ग्राम में शिविरों का आयोजन हुआ, परन्तु सफ लता नहीं मिली। तत्पश्चात कांकेर में विद्या शिविर का आयोजन करवाया,अपने मित्रों परिजनों को शिविर में भाग लेने हेतु प्रेरित किया अब बात समझ में आयी है,

श्री अंजनी अग्रवाल रायपुर से - भक्ति वादी परिवार में जन्म लिया। 87-88 से गायत्री परिवार जुडा ,वर्ष 90 से बाबाजी के सम्पर्क में आया। बाबाजी घर पर ही शिविर लिये परन्तु बात पकड में नहीं आयी। गणेश जी की शिविर से बात पकड में आने लगी तब से अब तक 10-12 परिवार मिलकर रायपुर से 25 किलो मीटर दूर अछोटी नामक स्थान पर एक शिक्षण संस्थान छोटे बच्चों का स्कूल जहां पर शिविर निरंतर चले जहां पर स्वावलम्बन का कार्य भी चले इस उद्देश्य से संस्थान पर ही देशी गायों का डेयरी चल रहा है। जिनके गोबर एवं गो मूत्र से विभिन्न दवाई (कीट नाशक) निर्माण एवं गोबर खाद पर आधारित खेती चल रही है। इस संस्थान को अन्युदय संस्थान का नाम दिया गया है। बाबाजी के साहित्यों को छपाने का काम में भी हमारी भागीदारी होती है। संस्थान पर लघु-कुटीर उद्योग लगाने की बात चल रही है। श्री मती मीना अग्रवाल ने कहा कि घर में बात को रखने की विधि में परिवर्तन हुआ है। यदि कहीं बात कम ज्यादा दिखती है तो उसे हम प्रस्ताव विधि से एक दूसरे के समक्ष रखते है, जिससे सभी को ठीक लगता है। अब घर की कलह समाप्त हो गई है।

श्री साधन भट्टाचार्य-छत्तीसगढ - बाबाजी के साथ विगत 7 वर्षो से साथ रहने का सौभाग्य मिला। भिलाई से 5 किलो मीटर दूर एक केन्द्र खोलने का निर्णय लिया गया है,जहां पर श्री नरेन्द्र मिश्रा,एवं श्री बलवन्त जी के साथ काम करने की संभावना बनी है। साहित्य प्रकाशन में अभी तक 5 पुस्तकों का छपाई हो गया है । 1 किताब की छपाई का काम होने वाली है। मैं अपना स्वयं लेख लिखूँ ऐसा मन है। परन्तु अनुकूल समय के अभाव में लिख नहीं पाया हूँ । जेल से छूटे हुये कैदियों के साथ काम करने का प्रयास हो रहा है सम्पर्क बना हुआ है। स्कूल हेतु पाठ्य पुस्तिका लिखी गई है ,कुछ सुधार संशोधन की आवश्यकता लग रही है।

श्रीमति सुनिता पाठक भोपाल - विद्या से स्वयं के प्रति विश्वास बढा है ऐसा लगा। अपने पति जी के साथ भोपाल में चिन्मय संस्था से सम्पर्क कर 3 शिविर का संचालन हुआ है।परिवार मानव पत्रिका के सम्पादन एवं प्रकाशन में भागीदारी की बात कहीं।

श्री सुशील बांदा से -96 से बांदा में शिविर चल रहा है। क्षेत्र के आस- पास विद्या के लिये वातावरण बनाने का काम चल रहा है। ग्राम में समझ पूरा हो जाय तो अच्छा माहौल बन सकता है। स्वयं प्रमाणित हो कर बच्चों एवं सभी आयामों को काम करने का मन है। उचित स्थान मिलने पर काम जल्दी होगा। फल उत्पादन एवं प्रोसेसिग का काम चल रहा है।

कुमार संभव कानपुर से -कानपुर में मानवीय शिक्षा स्वावलम्बन संस्थान का कार्य चल रहा है। मानवीय समाज के सभी आयामों पर काम प्रारंभ किया गया है। संस्थान में 10 लोग निवास रत है। संस्थान का लक्ष्य निरंतर सुख से जीने की मानवीय परम्परा स्थापित करना है। संस्थान में पहले वर्ष स्वावलम्बन को सुनिश्चित करना है। इसके तहत कृषि ,पशु पालन,एवं दंत मंजन निर्माण करना है। संस्थान द्वारा साफ्ट वेयर निर्माण का भी काम करने का प्रस्ताव है। गांव के लोगों तक जुडने का प्रयास चल रहा है। समझदारी का कार्य संस्थान पर चल रहा है। जिसका सुबह से शाम तक कार्य व्यवहार का मूल्यांकन प्रति दिन शाम को होता है। प्रति दो माह में एक शिविर का आयोजन संस्थान में होगा।

भारत भूषण त्यागी बीटा से - जन्म आर्य समाज में हुआ,गायत्री परिवार से 97 में जुडा। प्रारंभ से गांव को सजाने का प्रयास था।विद्या के माध्यम से व्यवहार कार्य का प्रमाण मिलता है। स्वावलम्बन के क्रम में मधुमक्खी पालन एवं बीज उत्पादन किया जा रहा है। केचुवा खाद से मानवीय खेती की जा रही है।

अभयवान खेडे सिवनी से -पडोसियों से चर्चा प्रारंभ कर आपस में आने वालें प्रश्नों का निराकरण किया। अब शिक्षा पर काम करने का मानस है। दो प्राइवेट स्कूल के विद्यार्थीयों के साथ नैतिक शिक्षा पढायें जा रहे है। साथ ही नेहरू युवा केन्द्र एवं युवा मण्डल के साथ चर्चा प्रारंभ है। 7 मित्र एवं 12 बहने जुडकर विकास खण्ड स्तर पर काम प्रारंम्भ किया गया है। व्यक्तिगत उपलब्धि अपने परिवार में देखने को मिला है। सिहोर जिले में समिति के माध्यम से काम चल रहा है।

युवराज जी सिकन्दरा राव - अपने प्रस्ताव में कहा की विद्या को स्कूल में सिलेबस के माध्यम से पढाया जाये।

अशोक सिरोही बिलौरी मुरादाबाद -विद्या की बात पच रही है। संस्थान चलाने का मन है।

महावीर जी मेरठ- सर्वोदय समाज से प्रारंभ किया परिवार मानव पत्रिका पढने से लगा कि जो बात कमी थी। शायद वह इस विद्या के माध्यम से मिल सकती है।

.....**जी मसूरी से**- मसूरी में सिद्ध संस्था के माध्यम से समाज में विभिन्न आयु वर्ग के लोगों के साथ काम संचालित हो रहा है।

संजीव जैन दिल्ली से - दिल्ली को गोविन्दपुर से अलग नहीं देख पा रहा हूँ ,वहां काफी दूरिया है जिसे पाटना हैं। दिल्ली के **N.S.S.** के छात्र यहां शिविर के लिए आते है ,उनमें अब कुछ सम्भावना बनी है।

सम्मेलन का अंतिम दिवस क्षेत्रीय गणमान्य व्यक्ति की उपस्थिति में उत्सव दिवस के रूप में मनाया गया भाई प्रदीप पूरक की वंदना गीत एवं दिनेश जैन के द्वारा जीवन विद्या की महिमा गीत से सत्र प्रारंभ हुआ। सुश्री अर्चना बागडिया के द्वारा बाबाजी का जीवन इतिहास एवं विद्या की अवधारणा पर सारगर्भित प्रकाश डाला गया। आदरणीय गणेश बागडिया ने देश भर में विद्या के अवधारणा में चल रहे ,कार्य क्रर्मो की सार संक्षेप स्थिति - गति की प्रस्तुति की।

सम्मेलन के निष्कर्ष एवं निर्णयों के लिए सर्वोदय परिवार से आयें आदरणीय रामजी भाई ने अपनी बातें रखते हुए कहा कि हम सभी लोग सामाजिक कार्य करने की पृष्ठ भूमि से आये है। मैं सर्वोदय परिवार से जुडा हूँ। वर्तमान में विद्या की अवधारणा को देश में फैलाने का प्रयास कर रहा हूँ। जन आन्दोलन करने वाले समाज के प्रति सचेष्ठ रहे। सभी प्रबोधकों में स्पष्ठता हो जितना समय मिले उतना ही बताया जाए। प्रबोधकों की परिपूर्णता के लिए प्रबोधन कार्य में लगे सभी प्रबोधक मित्र मिलन के रूप में वर्ष एक जगह एकत्रित हो कर अपनी प्रस्तुति करें एवं हम सब अपनी कमी को परस्परता में पूरा करें। प्रस्ताव में निर्णय लिए गया कि मित्र मिलन के लिए पुन: एक साथ मिलना वर्तमान में शायद सम्भव नहीं होगा पर अनुभव शिविर के स्वरूप को केवल प्रबोधक स्तर के लोगों के लिए किया जाए। परस्पर मैत्री एवं सूचना के आदान प्रदान के लिए अमरकंटक,आंवरी,कानपुर,बिजनौर को सूचना केन्द्र के रूप में तय किया गया जहां से क्षेत्रीय सूचनाओं गतिविधियों को संकलित कर प्रकाशन हेतु गोविन्दपुर प्रेषित करने की बात कहीं गई। परिवार पत्रिका के सम्पादन के लिए भोपाल से पाठक परिवार की भागीदारी पर निर्णय लिया गया कि, वर्तमान में पत्रिका का प्रकाशन गोविन्दपुर से ही हो सभी लोगों से लेख रिपोर्ट प्रकाश हेतु अपेक्षित है। बाबा जी के सहित्यों के प्रकाशन के लिए रायपुर, भिलाई ,अमरकंटक वालों ने जिम्मेदारी ली है। अन्य शिक्षण समाग्री एवं सहित्य के प्रकाशन में सभी जिम्मेदार लोगों की सहज भागीदारी बनती है।

जीवन विद्या शिविरों का स्वरूप बच्चों युवा ,महिलाओं परिवार एवं समय को ध्यान में रख कर और प्रभावी बनाने के लिए अपनी भाषा बोली का प्रयोग हो ,सरलीकरण हो पर मूल वस्तु (भाव) में बदलाव ना हो यह पूरी ध्यान रखी जाए। स्कूली पाठय क्रम प्रकाशन हेतु कुछ लोग ने अपेक्षा की। बाबा ने कहा कि मूल बात स्वयं का जीना ही प्रमाण ही। प्रबोधकों के लिए मार्गदर्शिका पुस्तिका आदरणीय रामजी भाई द्वारा लिखी शीघ्र प्रकाशित होने की जानकारी मिली। कार्यक्रम के समापन अवसर में जिला कलेक्टर मुकुल ..... जी सपरिवार उपस्थित रहे। अपने पदस्थ जिले में सर्व शुभ के लिए हो रहे कार्यक्रमों में अपनी भागीदारी का अश्वासन दिया।

अन्त में पूज्य बाबा जी ने अपने आर्शीवचन में कहा कि मैं सब पर विश्वास करता हूँ ,सम्मेलन का आशय पूर्णता के अर्थ में मिलन है। व्यक्ति समझदार होकर परस्परता में सही व्यवहार ,सही कार्य करके ही सुखी -समृद्ध होता है। अस्तित्व के कोई रहस्य नहीं है। अपने को प्रमाणित करने के लिए ही सम्मेलन का आयोजन है।

गोविन्दपुर में अतिथ्य सत्कार, आवास एवं भोजन की अति उत्तम व्यवस्था रही। पूरे भाव के साथ शरीर व्यवस्था को ध्यान में रख कर भोजन व्यवस्था कि गई। सभी लोगों ने सुखद सनिध्य की अनुभूति की।

आदरणीय आर्य भाई साहब सम्मेलन का संक्षिप्त रिपोर्ट आपके अवलोकनार्थ एवं आवश्यक सुधार के बाद प्रकाशनार्थ सर्व शुभ की कामनाओं के साथ सादर सम्प्रेषित है।

आपका स्नेहाकांक्षी

दिनेश जैन

आश्रम ऑवरी कॉकेर